संजीवनी की तलाश में

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

जब रावण के पुत्र मेघनाद के तीर के शिकार होकर लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए और मरणासन्न थे, तब हनुमान ने लंका के राज चिकित्सक सुषेण से सलाह मांगी। सुषेण ने हनुमान से कहा कि वे फौरन द्रोणगिरि पर्वत जाकर चार वनस्पतियां ले आएं: मृतसंजीवनी (मरे हुए को जिलाने वाली), विशाल्यकरणी (तीर निकालने वाली), संधानकरणी (त्वचा को स्वस्थ करने वाली), और सवर्ण्यकरणी (त्वचा का रंग बहाल करने वाली)। इनका उल्लेख श्रीमद बाल्मिकी रामायण के 74वें अध्याय के श्लोक क्रमांक 29-34 में आता है।

हनुमान बेशुमार वनस्पतियों में से इन्हें पहचान नहीं पाए, तो पूरा का पूरा पर्वत उठा लाए। लक्ष्मण को लगभग मृत्यु के मुख से खींच लिया गया। वे न सिर्फ जीवित हुए बल्कि विजयी भी हुए।

इन चार वनस्पतियों में से मृतसंजीवनी (या सिर्फ संजीवनी कहें) सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बारे में कहा जाता है कि यह व्यक्ति को मृत्यु शय्या से जीवित कर सकती है। तो सवाल है कि यह पौधा कौन-सा है, कहां मिलता है और क्या यह रामायण में वर्णित चमत्कार कर सकता है?

यद्यपि वनस्पति शास्त्रियों और आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने कई उम्मीदवार पौधों के नाम गिनाए हैं मगर अभी तक न तो कोई व्यवस्थित खोज हुई है और न ही आम सहमति बन पाई है। अब ऐसा लगता है कि कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर और वानिकी महाविद्यालय सिरसी के डॉ. के.एन. गणेशैया, डॉ. आर. वासुदेव और डॉ. आर. उमा शंकर के केंद्रित प्रयासों के फलस्वरूप स्थिति यहां तक पहुंची है कि हम दो पौधों के बीच चुनाव कर सकते हैं। मैं सलाह दूंगा कि यदि आपकी रुचि है तो इस शोध पत्र को ज़रूर पढ़ें। यह अत्यंत पठनीय शोध पत्र करंट साइन्स के 25 अगस्त 2009 के अंक में प्रकाशित हुआ है। इस शोध पत्र को पढ़ते हुए आप इसके पैने, वैज्ञानिक तर्कों के कायल हो जाएंगे। सबसे पहले शोधकर्ता कहते हैं कि हमें यह निश्चित कर लेना चाहिए कि बाल्मिकी ने जिस अलंकारिक शैली में इस वनस्पति का वर्णन किया है, कहीं वह कोई काल्पनिक वनस्पति तो नहीं है। इसके लिए हमें पूछना होगा कि ऐसी वनस्पति में क्या गुण होने चाहिए।

इसका संकेत किसी ऐसे विलुप्त अथवा विद्यमान पौधे की ओर होना चाहिए जिसमें जीवनदायी गुण हों; या हो सकता है कि यह वनस्पति के एक समूह की ओर इशारा करता हो जिनमें ऐसी संभावना हो। या हो सकता है कि यह किसी भी अच्छी जड़ी-बूटी के लिए एक उपमा भर हो। हमें इस वनस्पति को कवि की कल्पना कहकर खारिज करने से पहले इन तीन विकल्पों की खोजबीन करनी होगी। मगर सवाल है कि यह काम करें कैसे?

तो भारत भर में विभिन्न भाषाओं और बोलियों में उपलब्ध रामायण के सारे संस्करणों को देखें। क्या इन सबमें ऐसे पौधे का ज़िक्र है जिसका नाम संजीवनी या मिलता-जुलता हो?

क्या इन विभिन्न संस्करणों में इस पौधे का प्राकृत वास पर्वतीय क्षेत्र बताया गया है? और क्या इस पौधे में चिकित्सकीय अथवा 'पुनर्जीवन' के गुणों का वर्णन है? गणेशैया, वासुदेव और उमा शंकर ने भारतीय जैव संसाधन डैटाबेस लायब्रेरी में 80 भाषाओं व बोलियों में अधिकांश भारतीय पौधों के बोलचाल के नामों की खोज की। उन्होंने संजीवनी शब्द या उसके पर्यायवाचियों और मिलते-जुलते शब्दों की खोज की। नतीजा? इस खोज में 17 प्रजातियों के नाम सामने आए। जब विभिन्न भाषाओं में इन शब्दों के उपयोग की तुलना की गई तो मात्र 6 प्रजातियां शेष रहीं।

इन 6 प्रजातियों में से 3 ऐसी थीं जो संजीवनी या उससे मिलते-जुलते शब्द से सर्वाधिक बार और सबसे ज़्यादा एकरूपता से मेल खाती थीं - *क्रेसा क्रेटिका*, *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* और *डेस्मोट्रायकम फिम्ब्रिएटम*। इनके सामान्य नाम क्रमशः रुदन्ती, संजीवनी बूटी और जीवका हैं।

वर्ग पहेली 62

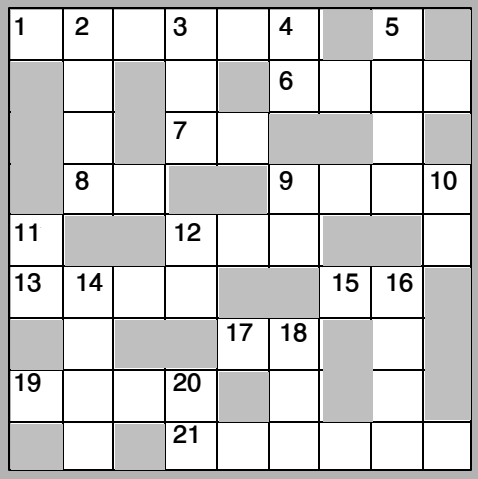

संकेत

बाएं से दाएं

1. दोहरी कुंडली के दो नायक (4,2)
6. छुट्टी का दिन (4)
7. प्रत्येक दस वर्ष में ऊंचाई (2)
8. हिमालय में सुर ताल (2)
9. बिजली, गर्मी को रोकने वाले पदार्थ (4)
12. गैस रिसाव का शहर (3)
13. गड़बड़ पर तवा नाव तो चलाएगा (4)
15. पानी रखवाली में पानी (2)
17. वैज्ञानिक शोध का परिणाम (2)
19. वस्तु से बड़ा प्रतिबिंब बनना (4)
21. भोजन के नमक जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व (3,3)

ऊपर से नीचे

2. पर्यटक साल में पैसा बनाने की जगह (4)
3. समुद्र से मिला ठोस पदार्थ (3)
4. हाथ का टैक्स (2)
5. जंगल में आग (4)
9. परिवार का योग (2)
10. आने वाले दिन की मशीन (2)
11. कुछ मेंढक यहां रहते हैं (2)
12. भाव विभोर स्थिति में सुबह हुई (2)
14. किनारे बसे स्थान (4)
16. खून बहना (4)
18. उल्टा सीधा एक समान कमल (3)
20. खनन में उल्टे नाखून (2)

अब हमें तीन प्रजातियों में से चुनाव करना है। तो अगला सवाल है कि इनका प्राकृत वास क्या है? इनमें से कौन-सी पर्वतीय क्षेत्र में पाई जाती है जहां हनुमान ने तलाश किया होगा?

पहली (*क्रेसा क्रेटिका*) तो नहीं हो सकती क्योंकि यह दखन के पठार के सूखे क्षेत्र में या फिर नीची भूमि पर पाई जाती है। तो बच गई दो। संजीवनी या तो *सिलेजिनेला* है या *डेस्मोट्रायकम*।

अब इन वैज्ञानिकों ने शर्लक होम्स नुमा परिकल्पना का इस्तेमाल किया। वे कौन-से मापदंड होंगे जिनका उपयोग रामायण काल के चिकित्सक औषधीय तत्व के रूप में करते होंगे? प्राचीन भारतीय पारंपरिक चिकित्सक 'समरूपता सिद्धांत' या 'डॉक्ट्रीन ऑफ सिग्नेचर' की मान्यता का खूब उपयोग करते थे। इस सिद्धांत का आशय यह है कि जिस पौधे की बनावट प्रभावित अंग या शरीर के समान हो, वह उससे सम्बंधित रोग का उपचार कर सकता है।

सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस एक अत्यंत सूखा-सह वनस्पति है जो कई महीनों तक 'मृत', सूखी और निष्क्रिय पड़ी रहती है और एक बारिश आते ही (या पानी मिलने पर) 'पुनर्जीवित' हो उठती है। यह हरी-भरी होकर फैल जाती है। यदि यह मान लिया जाए कि 'समरूपता सिद्धांत' सही है तो क्या *सिलेजिनेला ब्रायप्टेरिस* ही वह वनस्पति थी जिसने लक्ष्मण को 'पुनर्जीवित' किया था?

ग्वालियर के डॉ. एन.के. शाह (अब भागलपुर में हैं) ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के डॉ. शर्मिष्ठा बैनर्जी और सैयद हुसैन के साथ मिलकर जीव विज्ञान की आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* पर कुछ प्रयोग किए हैं। इन तकनीकों में जैव रासायनिक व कोशिका जीव विज्ञान की विधियां शामिल हैं। इन शोधकर्ताओं के अनुसंधान से पता चला है कि *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* में कुछ ऐसे अणु पाए जाते हैं जो ऑक्सीकारक क्षति व पराबैंगनी क्षति से चूहों और कीटों की कोशिकाओं की रक्षा

करते हैं और उनकी मरम्मत में मदद करते हैं। ऑक्सीकारक व पराबैंगनी दोनों तरह की क्षतियां तंत्रिकाओं को प्रभावित करती है।

तो क्या *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* ही दंतकथाओं की संजीवनी है?

सच्चे वैज्ञानिकों की तरह गणेशैया और उनके साथी जल्दबाज़ी में कोई निष्कर्ष नहीं निकालते। बल्कि उनका कहना है कि संजीवनी पर दावे के मामले में दूसरा पौधा *डेस्मोट्रायकम फिम्ब्रिएटम* भी उन्नीस नहीं है।

मगर करंट साइन्स के संपादक ने इस शोध पत्र का परिचय देते हुए टिप्पणी की है कि *सिलेजिनेला* तो मध्य प्रदेश के अरावली पर्वत क्षेत्र (और शायद उत्तराखंड के द्रोणगिरी) में पाया जाता है, वहीं *डेस्मोट्रायकम* पश्चिमी घाट में मिलता है। "यदि हनुमान द्वारा परिवहन की दृष्टि से देखें तो लगता है कि दूसरी प्रजाति (*डेस्मोट्रायकम*) ज़्यादा नज़दीक में उपलब्ध रही होगी।"

यह भी गौरतलब है कि अपनी पुस्तक 'इन सर्च ऑफ लंका' (लंका की खोज में) में डॉ. डी.पी. शर्मा कहते हैं कि रामायण की लंका संभवतः आजकल का श्रीलंका नहीं था। ज़्यादा संभावना इस बात की है कि यह गोदावरी डेल्टा में कोई टापू रहा होगा। यदि यह बात सही है तो क्या *डेस्मोट्रायकम फिम्ब्रिएटम* ही वास्तविक संजीवनी थी?

गणेशैया, वासुदेव और उमा शंकर का निष्कर्ष है कि इन दो प्रजातियों के बीच फैसला करने के लिए और अनुसंधान की ज़रूरत है। तो लीजिए एक अनुसंधान परियोजना तैयार है।

(स्रोत फीचर्स)